संरक्षक की कलम से

प्रिय पाठकों,

मुझे यह कहते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की, राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से समय-समय पर राजभाषा हिंदी से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता रहता है। इन गतिविधियों में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विदित है कि हमारे संस्थान की कार्य संस्कृति तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति की है और सामान्यतः यह कहा जाता है कि इन कार्यों में हिन्दी का अपेक्षानुरूप प्रयोग कर पाना काफी कठिन होता है, फिर भी संस्थान का यह प्रयास रहता है कि अपनी वैज्ञानिक गतिविधियों में भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को यथासंभव बढ़ावा दिया जाए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने 19-20 नवम्बर 2015 को "बदलते परिवेश में जल संसाधन प्रबंधन की भूमिका" विषय पर 5वीं राष्ट्रीय जल संगोष्ठी का आयोजन किया। संस्थान विगत दो दशकों से हर चौथे वर्ष राष्ट्रीय जल संगोष्ठी का आयोजन करता आ रहा है। इसकी संम्पूर्ण कार्यवाही हिंदी में आयोजित की जाती है। इस तरह की महत्वपूर्ण एवं उपयोगी गतिविधियां प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए सुनिश्चित की जाती हैं।

संस्थान अपने पदाधिकारियों को हिंदी लेखन हेतु प्रोत्साहित करने के दृष्टिकोण से पिछले 21-22 वर्षों से "प्रवाहिनी" नामक वार्षिक हिंदी पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन करता आ रहा है। इस पत्रिका में विभागेत्तर लेखकों की रचनाओं को भी प्रकाशित किया जाता है। विद्वत लेखकों के उपयोगी एवं प्रेरणाप्रद लेख हमें इस दिशा में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यद्यपि, आज समाज में मनोरंजन एवं ज्ञान-विज्ञान के एक से बढ़कर एक साधन उपलब्ध हैं जिन्होंने आम-आदमी का ध्यान पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों से हटा दिया है, फिर भी हमारा प्रयास है कि सामान्य जनमानस को रोचक एवं उपयोगी पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन की ओर आकर्षित व प्रोत्साहित किया जाए।

आज हमारे देश में जगह-जगह पर जल संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं। कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि, कहीं गुणवत्ता ह्रास तो कहीं जलजनित रोगों में वृद्धि पाई जा रही है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमारे संस्थान ने पांच वर्ष पूर्व यह निर्णय लिया था कि एक ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाए जिसमें जल से जुड़ी समस्याओं और उनके समाधानों की जानकारियों को समाविष्ट कर इसे आम आदमी तक पहुंचाया जाए। अतः इसी क्रम में संस्थान ने यह निर्णय लिया कि "प्रवाहिनी" पत्रिका के प्रकाशन के साथ-साथ हिंदी में एक और ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाए जिसमें जल संबंधी तकनीकी जानकारी, समीक्षाएं, समाचार, वर्ग पहेली आदि को सम्मिलित किया जाए जिससे तकनीकी एवं वैज्ञानिक कार्यों में भी राजभाषा हिंदी को व्यापक प्रोत्साहन मिल सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए संस्थान सितम्बर 2011 से "जल चेतना" नामक इस पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कर रहा है।

"जल चेतना" पत्रिका के जनवरी 2016 अंक को समस्त सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। आशा है कि इस अंक में दी गई जानकारियों से समस्त पाठकगण अवश्य लाभान्वित होंगे।

मैं उन समस्त प्रबुद्ध लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक एवं महत्वपूर्ण लेख भेजकर इसके प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है। सम्पादक मंडल बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

राजदेव सिंह

(राजदेव सिंह)

निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

National Institute of Hydrology

(जल संसाधन मंत्रालय के अधीन भारत सरकार की समिति)

(Government of India Society under Ministry of Water Resources)

जलविज्ञान भवन

Jalvigyan Bhawan

रुड़की – 247 667, भारत

Roorkee - 247 667, INDIA